# महात्मा गांधी के प्रमुख विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

***Pallavi Anand***

*Scholar, Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi,*
*VishwaVidyalaya, Wardha, Maharashtra, India*

**सार**

व्यक्ति के जीवन में वैचारिक दृष्टि का श्रेष्ठ होना सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि एक चरित्रवान व्यक्ति का विचार ही उसे समाज में विशिष्ट स्थान प्रदान करता है। गांधीजी ने अपने जीवन को केवल निजी उन्नति तक सीमित नहीं रखा अपितु राष्ट्र और समाज के पुनरोद्धार के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने सत्य, अहिंसा, सेवा, स्वदेशी, सर्वधर्म समभाव तथा मानवता आदि सिद्धांतों के द्वारा भारतीय समाज में नई चेतना उत्पन्न की। सम्प्रति गांधीजी के विचारों की आवश्यकता और अधिक महसूस होती है क्योंकि आधुनिक समाज अनेक सामाजिक, नैतिक, आर्थिक तथा मानवीय संकटों से गुजर रहा है। ऐसे में हिंसा, असहिष्णुता, भ्रष्टाचार, भौतिकवाद, सामाजिक विषमता, धार्मिक तनाव जैसी समस्याएँ निरंतर बढ़ती जा रही हैं। इस विषम परिस्थिति में गांधीजी के सत्य, अहिंसा, प्रेम, सेवा, सादगी और सर्वधर्म समभाव जैसे सिद्धांत मानव समाज को शांति और नैतिकता की ओर अग्रसर कर सकते हैं। गांधीजी का अहिंसा का सिद्धांत आज विश्व में बढ़ती हिंसा और युद्ध की विकट परिस्थितियों में अत्यंत प्रासंगिक है।

**बीज शब्द-** महात्मा, गांधी, अहिंसा, सत्य, विचार, सामाजिक, राजनीति, ब्रह्मचर्य, समाज

## मूल आलेख

भारतीय समाज के महत्वपूर्ण प्रसिद्ध जननायकों मे प्रमुख महात्मा गांधी; महान चिंतक, पत्रकार, समाज-सुधारक तथा दूरदर्शी विचारक थे। उनका जन्म 2 अक्टूबर 1869 को उस समय हुआ जब भारत अंग्रेज़ी हुकूमत की गुलाम था और हमारा देश राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टि से अत्यंत कठिन परिस्थितियों से गुजर रहा था। अंग्रेज़ी शासन की दमनकारी नीतियों के फलस्वरूप भारत की आर्थिक स्थिति लगातार बदतर होती जा रही थी। भारतीय उद्योग-धंधे नष्ट हो रहे थे, किसानों पर अत्यधिक कर लगाए जा रहे थे तथा जनता गरीबी और शोषण से पीड़ित थी। सामाजिक स्तर पर भी भारतीय समाज अनेक कुरीतियों से ग्रस्त था। जाति-भेद, छुआछूत, ऊँच-नीच की भावना, बाल-विवाह तथा सामाजिक असमानताएँ व्यापक रूप से प्रचलित थीं। समाज में नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का पतन दिखाई देने लगा था। ऐसी विपरीत परिस्थिति में महात्मा गांधी का जन्म भारतीय इतिहास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। गांधीजी ने अपने जीवन को केवल निजी उन्नति तक सीमित नहीं रखा अपितु राष्ट्र और समाज के पुनरोद्धार के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने सत्य, अहिंसा, सेवा, स्वदेशी, सर्वधर्म समभाव तथा मानवता आदि सिद्धांतों के द्वारा भारतीय समाज में नई चेतना उत्पन्न की। उन्होंने जाति-भेद, अस्पृश्यता, सामाजिक अन्याय, आर्थिक शोषण तथा राजनीतिक दासता के विरुद्ध संघर्ष करते हुए अपने संपूर्ण जीवन को राष्ट्रसेवा में लगा दिया। इस प्रकार महात्मा गांधी का व्यक्तित्व भारतीय समाज के नैतिक, सामाजिक और राजनीतिक पुनर्जागरण का प्रतीक सिद्ध हुआ। "जब मैं अपने उपन्यास 'पहला गिरमिटिया' के लिए सामग्री एकत्रित करने की गरज से दक्षिण अफ्रीका

में था, तब मैंने पाया कि वहाँ के लोग, यहाँ तक कि नौजवान भी, गांधी को जानते हैं और मानते भी हैं कि अगर गांधी न आए होते तो वे सब आज भी गिरमिटिया ही होते। सर विदिया, आपके मुल्क, जिसे आप अपना मुल्क मानने से इनकार कर चुके हैं, त्रिनिदाद के प्रधानमंत्री ने भी कहा था कि गांधी के कारण संसार भर के गिरमिटियों को सम्मान मिला। यही बात मुझे मॉरिशस में सुनने को मिली थी।"[i]

महात्मा गांधी के विचारों का प्रभाव वैश्विक स्तर पर पड़ा। "अब प्रश्न यह है कि गांधी की इस अद्भुत वैश्विक प्रतिष्ठा का क्या कारण है? गांधी ने तीन अलग-अलग देशों में काम किया (और महादेशों में भी) : इंग्लैंड, दक्षिण अफ्रीका और भारत में। वह साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलनकारी, समाज सुधारक, धार्मिक चिंतक और एक मसीहा थे। उन्होंने दुनिया के इतिहास में सबसे ज़्यादा हिंसक सदियों में से एक में विरोध के एक ऐसे अस्त्र का आविष्कार किया जो अहिंसा पर आधारित था। राजनीतिक प्रचार के बीच उन्होंने छूआछूत मिटाने और हस्तशिल्प के पुनरुद्धार का भी प्रयोग किया। वह एक धर्मपरायण हिंदू थे लेकिन दूसरी धार्मिक परंपराओं में उन्हें काफी दिलचस्पी थी। व्यक्तिगत लालच और आधुनिक तकनीक की अनैतिकता के प्रति उनकी चेतावनी कई बार लोगों को प्रतिक्रियावादी लगती थी लेकिन हाल के समय में फिर से वो केंद्र बिंदु में आ गई है जब से पर्यावरण संरक्षण पर नई बहस शुरू हुई है।"[ii]

सम्प्रति गांधीजी के विचारों की आवश्यकता और अधिक महसूस होती है क्योंकि आधुनिक समाज अनेक सामाजिक, नैतिक, आर्थिक तथा मानवीय संकटों से गुजर रहा है। ऐसे में हिंसा, असहिष्णुता, भ्रष्टाचार, भौतिकवाद, सामाजिक विषमता, धार्मिक तनाव जैसी समस्याएँ निरंतर बढ़ती जा रही हैं। इस विषम परिस्थिति में गांधीजी के सत्य, अहिंसा, प्रेम, सेवा, सादगी और सर्वधर्म समभाव जैसे सिद्धांत मानव समाज को शांति और नैतिकता की ओर अग्रसर कर सकते हैं। गांधीजी का अहिंसा का सिद्धांत आज विश्व में बढ़ती हिंसा और युद्ध की विकट परिस्थितियों में अत्यंत प्रासंगिक है। ठीक वैसे ही उनका सत्य का विचार सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी और नैतिकता की शिक्षा देता है। उपभोक्तावाद के इस दौर में गांधीजी की सादगी और सीमित उपभोग का सिद्धांत संतुलित जीवन की प्रेरणा प्रदान करता है। सामाजिक दृष्टि से भी गांधीजी के सर्वधर्म समभाव, मानवता और समानता संबंधी विचार समाज में बंधुत्व और सामाजिक समरसता को स्थापित करने में सहायक हैं। स्वदेशी और स्वावलंबन की उनकी अवधारणा आज आत्मनिर्भरता और स्थानीय विकास के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण बन गई है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि गांधीजी के विचार केवल ऐतिहासिक महत्व तक सीमित नहीं हैं वरन् वर्तमान समय की जटिल समस्याओं के निराकरण के लिए भी पथप्रदर्शक सिद्ध होते हैं। "भारतवासियों का एक बड़ा कर्तव्य है। वह यह है कि महात्माजी के अधूरे काम को वे पूरा करें। सत्य और अहिंसा की प्रतिष्ठा के लिए समाज का गठन ही ऐसा होना चाहिए जिसमें हिंसक प्रवृत्तियों को कम-से-कम पनपने का स्थान और अहिंसक वृत्तियों को प्रोत्साहन मिले। ऐसा समाज तभी बन सकता है जब उसका प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन को उन सिद्धांतों पर ढालना अपना ध्येय मान ले और इस प्रयत्न में लग जाए इसीलिए 'महात्माजी ने ग्यारह व्रतों का प्रतिपादन किया था, जिन्हें प्रार्थना के समय वह बराबर दोहराया करते थे। वे व्रत हैं- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह, शरीर-श्रम, अस्वाद, आत्म-निर्भरता, सर्वधर्म-समानता, स्वदेशी-स्पर्श-भावना।"[iii]

उनके जीवन से जुड़े विचार जितने उनके समय में प्रासंगिक और महत्वपूर्ण थे उतने ही आज भी तथा आने वाले समय में भी आवश्यक प्रतीत होते हैं। इसका सबसे प्रमुख कारण यह है कि गांधीजी सदैव धरातल से जुड़े हुए चिंतक रहे। उन्होंने कभी भी काल्पनिक आदर्शों की नहीं अपितु सामान्य जनजीवन की वास्तविक समस्याओं की बात की। उनके विचारों, लेखन तथा आंदोलनों का केंद्र सदैव आम जनता, समाज का कल्याण और मानवता का उत्थान रहा। गांधीजी ने सत्य, अहिंसा, सेवा, सादगी, स्वावलंबन, नैतिकता तथा मानव समानता जैसे सिद्धांतों को केवल उपदेश

के रूप में प्रस्तुत नहीं किया वरन् स्वयं अपने जीवन में उनका पालन करके समाज के समक्ष आदर्श स्थापित किया। यही कारण है कि उनके विचार आज भी प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को दिशा देने की क्षमता रखते हैं। गांधीजी के विचार व्यक्ति को शिक्षा के साथ-साथ उसे एक सजग, संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा भी प्रदान करते हैं। इसी प्रकार यदि कोई राजनेता गांधीजी के आदर्शों को अपने आचरण में उतार ले तो राजनीति केवल सत्ता प्राप्ति का माध्यम न रहकर जनकल्याण और नैतिक सेवा का माध्यम बन सकती है। गांधीजी का चिंतन समाज के अंतिम व्यक्ति के उत्थान पर आधारित था इसलिए उनके सिद्धांत प्रशासन और नेतृत्व को मानवीय संवेदनाओं से जोड़ते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में भी गांधीजी के विचार अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यदि विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा शिक्षण संस्थानों में गांधीजी के सिद्धांतों जैसे नैतिकता, श्रम की प्रतिष्ठा, अनुशासन, स्वच्छता, सेवा एवं आत्मनिर्भरता को व्यवहारिक रूप में अपनाया जाए तो शिक्षा केवल रोजगार प्राप्ति तक सीमित नहीं होके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का माध्यम बनेगी। वास्तव में गांधीजी ने उन्हीं मूल्यों और सिद्धांतों को सर्वोपरि माना, जो समाज, राष्ट्र और मानवता के कल्याण के लिए आवश्यक थे।

गांधीजी आजीवन सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, निर्भयता, सर्व-धर्म-समभाव, हरिजन, शरीर- श्रम, राष्ट्रभाषा हिन्दी, समय का सदुपयोग, रोगी-सेवा, मितव्ययिता, सफाई, चर्खा, विनम्रता, सादगी, अर्थ-शुद्धि, विनोद, शराबबंदी, नयी या बुनियादी तालीम, स्त्री उद्धार, उपवास, सत्याग्रह, ब्रह्मचर्य, रामराज्य, आस्था, सर्वोदय, न्यायसिता, स्वतंत्रता और लोकतंत्र, स्वदेशी आदि विचारों की उपासना करते रहे।

**1. सत्य-** महात्मा गांधी के सर्वोत्तम विचार सिद्धांत में से एक है सत्य। जीवन के शुरुआती दौर से ही उन्होंने सत्य को अपना बहुमूल्य अंग बना लिया था। कही भी गए सत्य रूपी विचार दृष्टि जीवन के साथ चलती रही। "सत्य की खोज में क्रोध, स्वार्थ, घृणा आदि विकार स्वभावत: छूटते जाते हैं अन्यथा सत्य की प्राप्ति असंभव ही हो जाए। जो व्यक्ति वासनाओं के वश में है, उसकी नीयत साफ होने पर भी वह कभी सत्य की प्राप्ति नहीं कर सकेगा। सत्य की खोज में सफलता प्राप्त होने पर मनुष्य प्रेम और घृणा, सुख और दुख आदि के द्वंद्वों से पूर्णत: मुक्त हो जाता है।"[iv]

व्यक्तिगत जीवन से लेकर राजनैतिक जीवन तक उन्होंने सत्य को अपना साथी बनाए रखा। "गांधी ने अपना सारा जीवन सत्य के विभिन्न रूपों व पहलुओं की खोज में लगा दिया। उदाहरण के तौर पर, नैतिक दृष्टि से, उन्होनें सत्य को परमार्थ के रूप में देखा। सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टिकोणों से, सत्य से उनका अभिप्राय ऐसे पारस्परिक सम्बन्धों से था जो न्यायोचित हों, भेदभावरहित हों, तथा सद्भाव व सहिष्णुता पर आधारित हों। राजनैतिक दृष्टिकोण से, सत्य से उनका अभिप्राय न केवल भारत की स्वतन्त्रता से था, बल्कि हर राष्ट्र की हर पराये शासन से स्वतन्त्रता से था, तथा विवादों के समाधान के क्षेत्र में वह अपने सत्याग्रह सहयोगियों से सदा यह अपेक्षा करते थे कि वे अपने विरोधी अथवा विपक्षी के प्रति, हिंसा अथवा दुर्भावना के बजाय, सद्भावना तथा सहानुभूति का दृष्टिकोण अपनायें।"[v]

1869 से 1948 के सफरनामा में उन्होंने अपने आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और सामाजिक जीवनयात्रा में बुनियादी तौर पर सत्य को ईश्वर माना। "महात्मा गांधी मानते हैं कि सत्य और अहिंसा आत्मा से उपजे सिद्धान्त हैं।' वह मानते थे कि सत्य की परिभाषा सभी मानव हृदयों में निहित होती है। सत्य का अर्थ है अस्तित्व में होना। शुद्ध सत्य को गांधी, काल, देश एवं परिस्थिति सापेक्ष मानते हैं और सत्य के साक्षात्कार को ही ईश्वर का साक्षात्कार स्वीकार करते हैं। गांधी यह मानते थे कि सत्य को मात्र चिन्तन ही नहीं वाणी और व्यवहार में भी अभिव्यक्त होना चाहिए।' गांधी सत्य को ही ईश्वर मानते थे। यही कारण है कि वह जीवन को सत्य के प्रयोग की संज्ञा देते थे। वह मानते थे कि जीवन प्रवाह में शुभ एवं अशुभ प्रवृत्तियों का द्वन्द्व उत्प्रेरक कारक होता है। यह प्रवृत्तियाँ व्यक्ति और

समाज में समान रूप से अन्तर्निहित होती हैं और उसके द्वन्द्व में शुभ की सिद्धि ही अभीष्ट शाश्वत सत्य है और ऐसे सत्य का साक्षात्कार ही वस्तुतः ईश्वर का साक्षात्कार है।"[vi]

1893 से 1914 तक दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के विरुद्ध लड़ाई और वहाँ भारतीयों के अधिकारों एवं सम्मान की रक्षा के लिए सत्य को अपना हथियार बनाकर जीत हासिल किये वहीं दूसरी दूर 1914- 1947 तक भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में अपनी लड़ाई सत्य को साक्षी मानकर लड़े। जीवन के सभी मोड़ पर उन्होंने सत्य का आश्रय लिया।

**2. अहिंसा-**"जो तोकों काँटा बुवै, ताहि बोइ तू फूल। जो तुम्हारे लिए काँटे बोए, उसके लिए तुम फूल बोओ।" [vii]

अहिंसा सभी कार्यों में सबसे कठिन कार्य है हिंसा से खुद को बचाएं रखना सबसे पवित्र काम है। आज के दौर में इस विचार का प्रचार-प्रसार करना सबसे महत्वपूर्ण है लोगों तक हिंसा के नकारात्मक पक्ष और अहिंसा के सकारात्मक पक्ष से साक्षात्कार करवाना बहुत जरूरी जान पड़ता है। "हिंसा से सब परिचित हैं, किन्तु अहिंसा के महत्व से सबको गांधी जी ने परिचित कराया। गांधी जी को अहिंसा का साक्षात्कार अफ्रीका में हुआ और फिर तो वह उनके जीवन का अंग बन गई।"[viii]

"महात्मा गांधी ने अहिंसा के सिद्धान्त को न केवल अपने पारिवारिक सूत्रों (माता पुतलीबाई, आया रम्भा तथा पत्नी कस्तूरबा), राजा हरिश्चन्द्र, तथा भक्त प्रहलाद जैसे प्रभावी नाटकों, जैन, बौद्ध तथा वैष्णव धर्मो; रामायण तथा महाभारत जैसे धर्मग्रन्थों, गुजराती कवि रायचन्द भाई; टालस्टाय के लेखों तथा बाईबल के "सरमन आन दिमाउन्ट" (पर्वत प्रवचन) से ग्रहण किया, बल्कि अपने 55 वर्षों के सार्वजनिक जीवन में गांधी हिंसा के अवसर टालने तथा अहिंसा के प्रयोग के अवसर खोजने का निरंतर प्रयत्न करते रहे।"[ix] गांधीजी ने एक अहिंसक व्यक्ति को कैसा होना चाहिए? यह तीन बंदर के माध्यम से बताया जोकि न बुरा देखे, न बुरा सुने तथा न बुरा बोलें।

विश्व स्तर पर जब देश में संघर्ष, युद्ध और तानाशाही का दौर चल रहा था जब अनेक देशों में हिंसा के बल पर शासन स्थापित किया जा रहा था वही दूसरी ओर गांधीजी ने इसके विपरीत शांति एवं अहिंसा की ज्योति जलायी जिससे देशभर में रोशनी की झलक दिखी। उन्होंने सत्य, अहिंसा और नैतिकता को अपने विचार का आधारशिला बना कर देश के कुरीतियों से लड़ाई लड़ी। "20वीं शताब्दी इस दृष्टि से बहुत उथल-पुथल भरी शताब्दी थी। दो विश्व युद्ध लड़े गए। रूप ने यूरोप के छोटे-छोटे गणतंत्रों को दुनिया भर में पोलितेरियत डिक्टेटरशिप स्थापित करने के नाम पर अपने आधिपत्य में ले लिया। मुसोलिनी और हिटलर जैसे तानाशाह हुए, जिन्होंने हिंसा के माध्यम से पूरी दुनिया पर शासन करने का सपना देखा। एक तरह से स्टालिन भी उसी वर्ग में आते हैं। गांधी दक्षिण अफ्रीका में गिरमिटियों की लड़ाई लड़ते हुए भारत की आजादी की लड़ाई की तैयारी कर रहे थे। अहिंसक संघर्ष के लिए वह उनका आन्तरिक प्रशिक्षण था जो बीस वर्ष तक चला। वर्ष 1915 में भारत लौटने पर गांधी ने कांग्रेस की बौद्धिक और सांविधानिक लड़ाई को जन-जन तक पहुँचाया। यह अकल्पनीय सफलता थी। पर उसके लिए उन्होंने हिंसा या उत्तेजना का सहारा नहीं लिया। वह उद्देश्य ही नहीं, साधनों की पवित्रता को भी जरूरी समझते थे।"[x]

सत्य, अहिंसा उनके जीवन के बहुमूल्य अंग है। इसी शक्तिशाली अंग का आधार पर उन्होंने दक्षिण अफ्रीका से लेकर भारत तक अपना परचम लहराया और समाज को उनके बेड़ियों से मुक्ति दिलायी।

**3. अपरिग्रह-** 'अपरिग्रह' शब्द से तात्पर्य है आवश्यकता से अधिक किसी वस्तु का उपभोग या अपने पास रखना। गांधीजी के अनुसार यह चोरी के समान है। "गांधीजी केवल उन्हीं वस्तुओं का उपयोग करते, उतनी ही सुविधाएँ स्वीकार करते थे,जिनकी उन्हें अनिवार्य आवश्यकता होती थी।"[xi] आज के समय में यह विचार एवं सिद्धांत कही परिलक्षित नहीं होता बल्कि इसके विपरीत अफसरों एवं नेताओं के गाड़ियों को जाने हेतु आम जनों को घंटों रुकवाया

जाता है। "दूसरे भाग में ? क्या तुमने अपने उपयोग के लिए दो भाग लिए है ? इसीका नाम है अन्धा प्रेम ! तुमने मेरे आराम के लिए दो भाग क्यों माँगे ? तुम्हें, क्या पता नहीं कि मेरी तक्कलीफ बचाने के लिए सरकार हवाई जहाज दे रही थी, स्पेशल ट्रेन की व्यवस्था करने को तैयार थी, पर मैंने मनाकर दिया ? हवाई जहाज में कितना खर्च होता, स्पेशल ट्रेन के पीछे कितनी गाड़ियाँ रुकती, हजारों आदमियों को तकलीफ होतीं, यह मैं कैसे सह सकता था ? जरा बाहर तो देख, कितने आदमी लटके-लटके सफर कर रहे हैं।" [xii]

'अपरिग्रह' का वास्तविक स्वरूप आत्मत्याग एवं स्वर्णिम नियम में निहित है। "अपरिग्रह अस्तेय के साथ जुड़ा है। यदि हमारे पास कोई ऐसी वस्तु है जिसकी हमें आवश्यकता नहीं है तो भले ही वह मूलत: चुराई गई वस्तु न हो, पर चोरी की संपत्ति की श्रेणी में ही गिनी जाएगी। परिग्रह का अर्थ है भविष्य के लिए व्यवस्था करना। सत्य शोधक अर्थात प्रेम के नियम का अनुयायी, कल के लिए बचाकर कुछ नहीं रख सकता। ईश्वर कल के लिए किसी वस्तु का संग्रह नहीं करता। वह वर्तमान के लिए जितना जरूरी है, उससे तनिक भी अधिक की सृष्टि कभी नहीं करता। इसलिए यदि हमें ईश्वर के विधान में आस्था है तो हमें यह भरोसा रखना चाहिए कि वह हमारे प्रतिदिन के भोजन, अर्थात हमारी आवश्यकता की सभी वस्तुओं की व्यवस्था करेगा।"[xiii]

अपरिग्रह जैसे विचार एवं सिद्धांत महात्मा गांधी ने स्वयं अपने जीवन में अपनाया साथ-ही-साथ समाज को जीसस विचार-धारा से परिचित अपने कार्यों के माध्यम से करते रहें। आज के दौर में इस सिद्धांत का पालन करने से शांति और मानसिक रूप से स्वस्थ बना जा सकता है।

**4. ब्रह्मचर्य-** "ब्रह्म का अर्थ है - ज्ञान और चर्या का अर्थ है- उपासना या साधना। बाल्यावस्था में ज्ञान की साधना की जाती थी, इसलिए इस काल को ब्रह्मचर्य आश्रम की संज्ञा दी जाती थी। इसे इन्द्रिय-संयम या निग्रह यानी इन्द्रियों को वश में करना भी माना जाता है। शिक्षा अर्जित करने के लिए इन्द्रिय-संयम अनिवार्य है।"[xiv] गांधीजी ने ब्रह्मचर्य को आत्मसयंम के समकक्ष रखा है। ब्रह्मचर्य को गांधीजी ने एक मानसिक दशा की संज्ञा दी है प्रायः लोग यही समझते है कि कामवासना पर नियंत्रण ही ब्रह्मचर्य है, लेकिन गांधीजी इस मत को अधूरा और गलत बताते है। गांधीजी सभी इंद्रियों पर नियंत्रण की स्थिति को ब्रह्मचर्य मानते है। वे मानते है कि केवल एक इंद्रिय को नियंत्रित करने का प्रयास शेष को स्वतंत्रता प्रदान करने जैसा है और व्यक्ति निश्चय ही इस प्रयास में विफल जो जाएगा। "ब्रह्मचर्य के सपूर्ण पालन का अर्थ ब्रह्मदर्शन है, यह ज्ञान मुझे शास्त्र के द्वारा नहीं हुआ। यह अर्थ मेरे सामने शनैः-शनैः अनुभवसिद्ध होता गया। तत्सम्बंधी शास्त्र-वाक्य मैंने बाद को पढ़े। ब्रह्मचर्य में शरीर-रक्षण, बुद्धि-रक्षण और आत्मा का रक्षण है, व्रत लेने के बाद इसका मुझे दिन-दिन अधिकाधिक अनुभव होने लगा। कारण, अब ब्रह्मचर्य को घोर तपस्या रूप रहने देने के बदले रसमय बनाना था, उसी के सहारे निभाना था। अतः अब उसकी नित नई खूबियों के दर्शन होने लगे।"[xv]

ब्रह्मचर्य के प्रयोग जैसे विचार ने महिलाओं को भोग की वस्तु के बजाय सम्मान और गरिमा रखने वाले व्यक्ति के रूप में देखने की प्रेरणा दी। गांधीजी द्वारा अपनाये गए सभी विचारों में एक मूल बात तथ्य उभरकर सामने आता है जो कि समान अधिकार से सभी को देखना बिना भेद-भाव के लोगों को देखना।

**5. अस्तेय-** अस्तेय से तात्पर्य है चोरी नहीं करना, रिश्वत से बचना आदि। गांधीजी के इस विचार के माध्यम से देश को भष्टाचार मुक्त बनाया जा सकता है। इस विचार के मूल में नैतिक मूल्य विध्यमान है। "महात्मा गांधी राजनीति में नैतिक मूल्यों की स्थापना एवं उसके अनुकरण के प्रबल पक्षपाती थे। इस सन्दर्भ में उन पर अपने राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले के चिन्तन का गहरा प्रभाव था। मेकियावेली सरीखे राजनीतिक विचारकों के विपरीत गांधी

का विश्वास था कि राजनीति कोई साध्य नहीं है; बल्कि वह न्याय, सत्य एवं नैतिक आदर्शों का साधन है। साध्य और साधन की समान रूप से पवित्रता के कायल महात्मा गांधी मानते थे कि नैतिक आदर्शों से रहित राजनीति पथभ्रष्ट होकर लक्ष्य से विमुख हो जाती है। राजनीति से धर्म का सम्बन्ध और उसमें आध्यात्मिकता का समावेश भी गांधी इसीलिये और उतना ही चाहते थे कि जिससे राजनीतिक जीवन नैतिक आदर्शों से अनुप्राणित बना रहे।"[xvi]

**6 . शारीरिक श्रम, 7. अस्वाद, 8. भय रहित 9. सर्वधर्म समभाव, 10. स्वदेशी, 11. स्पर्श-भावना, 12. सर्वोदय, 13. सत्याग्रह 14. स्त्री उद्धार** आदि विचारों के मेल से गांधी महात्मा बनते है।

गांधीजी के जीवन से जुड़े सभी विचार आज भी पूर्णतः प्रासंगिगक है। हर क्षेत्र एवं हर युग में महात्मा गांधी के विचारों का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। दिनकरजी ने गांधीजी के संदर्भ में कहा है कि

**" गांधी तूफान के पिता**
**और बाजों के भी बाज थे**
**क्योंकि वे नीरवता की आवाज थे।**"[xvii]

गांधीजी के विचारों को राजनीति, विज्ञान, इतिहास, दर्शनशास्त्र, साहित्य और अर्थशास्त्र जैसे पुस्तकों में पाठ्यक्रमों के माध्यम से पढ़ाया जाता है।

**निष्कर्ष-** उपरोक्त विचार सिद्धांत के माध्यम से देखा जा सकता है कि गांधीजी की वैचारिक दृष्टि बहुत व्यापक स्तर पर फैली हुई है। देश-विदेश से लेकर व्यक्ति के जीवन के छोटे-बड़े सभी पहलू में समाहित है। इन्हीं विचारों में वे अपनी व्यापक दृष्टि को परिलक्षित करते हुए समाज में फैली हुई अशांति, अस्पृश्यता, असभ्यता आदि का निवारण करते है। इस प्रकार आज के दौर में गांधीजी की वैचारिक दृष्टि के कारण समाज में बदलाव की एक उम्मीद हमेशा परिलक्षित होती है।

---

[i] किशोर, गिरिराज.(2019). गांधी और समाज. दिल्ली : राजकमल प्रकाशन. पृ. 22.
[ii] गुहा, रामचन्द्र.(2015). गांधी भारत से पहले. हरियाणा: पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया. पृ.xv
[iii] प्रसाद, डॉ.राजेंद्र.(2010). बापू के कदमों में. दिल्ली: प्रभात प्रकाशन. पृ. 275.
[iv] महात्मा गांधी के विचार
[v] राम रतन, डॉ.,& शोभिका, डॉ. शारदा.(1992). महात्मा गांधी की राजनैतिक अवधारणायें. दिल्ली: कालिंगा पब्लिकेशन्स. पृ. 13.
[vi] कुमार, डॉ.सतीश.(2006). गांधीवाद विविध आयाम. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन. पृ. 48.
[vii] दुबे, रामेश्वर दयाल.(2014). गांधी जीवन झलक. वर्धा: राष्ट्रभाषा प्रचार समिति. पृ. 3.
[viii] वही. पृ. 5.
[ix] राम रतन, डॉ.,& शोभिका, डॉ. शारदा.(1992). महात्मा गांधी की राजनैतिक अवधारणायें. दिल्ली: कालिंगा पब्लिकेशन्स. पृ.15.
[x] किशोर, गिरिराज.(2019). गांधी और समाज. दिल्ली : राजकमल प्रकाशन. पृ. 31.
[xi] दुबे, रामेश्वर दयाल.(2014). गांधी जीवन झलक. वर्धा: राष्ट्रभाषा प्रचार समिति. पृ. 7.
[xii] वही. पृ.7.
[xiii] ttps://www.mkgandhi.org/ebks/hindi/Mahatma-Gandhi-ke-Vichaar.pdf
[xiv] कुकरेती, हेमंत.(2020). गांधी-दर्शन आलोचनात्मक अध्ययन. दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन. पृ. 16.
[xv] गांधी, मोहनदस करमचन्द.(2020). सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा. दिल्ली: सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन. पृ. 140.
[xvi] कुमार, डॉ.सतीश.(2006). गांधीवाद विविध आयाम. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन. पृ. 35.
[xvii] कुकरेती, हेमंत.(2020). गांधी-दर्शन आलोचनात्मक अध्ययन. दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन. पृ.22.